B.A. Part I ; History (Sub./Gen.)

Unit - IV

पाठ : जैन धर्म का उदय और विकास

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत की भौतिक प्रगति की पृष्ठभूमि में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ, जिनकी संख्या प्राय: 62 मानी जाती है। इनमें से अधिकांश सनातन वैदिक धर्म की धारा में पैदा हुए पंथ थे, तो कुछ सुधारवादी पंथ थे, जो वैदिक धर्म में कतिपय सुधार चाहते थे। सुधारवादी सम्प्रदायों में जैन और बौद्ध धर्म प्रमुख थे, जिन्होंने भारतीय इतिहास में पहली बार धर्म सुधार आन्दोलन का सूत्रपात किया। जैन धर्म के संस्थापक वर्द्धमान महावीर थे, 'अहिंसा परमो धर्म:' का उन्होंने अमर संदेश दिया।

जैन धर्म का उदय छठी शताब्दी ईसा पूर्व की भौतिक परिस्थिति की पृष्ठभूमि में हुआ। छठी सदी ई०पू० कृषि की असाधारण उन्नति के साथ-साथ शिल्प, उद्योग, व्यापार-वाणिज्य और नगरों के उदय एवं विकास के लिए विख्यात है। लेकिन इनके विस्तार मार्ग की सबसे बड़ी बाधा थी- प्रादेशिक राज्यों के विस्तार के लिए जनपद और महाजनपद राज्यों के राजाओं के बीच प्रतिस्पर्द्धाजनित विनाशकारी युद्धों का सिलसिला, जिनसे न केवल अपार धन-जन की हानि हो रही थी, बल्कि उद्योग और व्यापार वाणिज्य भी बुरी तरह प्रभावित हो रही थी। फिर वैदिक यज्ञों के बढ़ते चलन के साथ बढ़ती पशुबलि और भौतिक विकास के दौर में मांसाहार की का बढ़ता चलन, कृषि के विस्तार को रोक रहा था, क्योंकि बगैर पशुधन की संरक्षा के कृषि के विस्तार की बात सोची ही नहीं जा सकती थी। इनके साथ ही वैदिक धर्म के अन्दर वर्ण एवं जाति व्यवस्था के कारण बढ़ती सामाजिक असमानता, वैश्यों तथा व्यापार-वाणिज्य की गौण स्थिति, आवागमन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक कई व्यवहारों एवं आचारों का निषेध आदि ऐसे कारण थे, जिन्होंने सुधार आन्दोलन के उदय का पथ प्रशस्त किया। सर्वोपरि ऋग्वैदिक काल से ब्राह्मणों द्वारा अपनी सर्वोच्चता के दावों और सामर्थ्यवान शक्तियों से आज्ञाकारिता की अपेक्षा से कुपित क्षत्रियों ने उत्तरवैदिक काल में उपनिषदों के माध्यम से ब्राह्मण सर्वोच्चता को चुनौती दी। लेकिन उपनिषदों की भाषा क्लिष्ट थी और ब्राह्मणों को उन्हीं की भाषा में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। अत: ब्राह्मणों के वर्चस्ववाद को क्षत्रियों ने वैश्यों तथा शूद्रों को अपने साथ लेकर लोकभाषा में भारी चुनौती दी, जिसका उद्घाटन महावीर ने किया और इस प्रकार छठी सदी ई०पू० में धर्म सुधार आन्दोलन की शुरुआत हुई।

महावीर का प्रारम्भिक नाम वर्धमान था, जिनका जन्म 540 ई०पू० में वैशाली जिला के बसाढ़ गाँव के निकट हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ क्षत्रिय कुल के प्रधान थे और माता त्रिशला सिद्धवी नरेश चेतक की बहन थीं। चेतक मगध सम्राट बिंबिसार का भी श्वसुर था। इस तरह से वर्धमान का सम्बन्ध दो प्रमुख राजवंशों से था। इसका लाभ वर्धमान को अपने धर्म प्रचार के समय मिला। बचपन से ही

वर्धमान सन्यासी प्रवृत्ति का था और सांसारिक सुखों एवं मोह-माया से उदासीन रहता था। फिर भी उसने माता-पिता के आदेश को मान विवाह कर गार्हस्थ्य जीवन को अपनाया। किन्तु शीघ्र ही इससे ऊबकर 30 वर्ष की आयु में वर्धमान ने पारिवारिक-सांसारिक जीवन का परित्याग कर दिया और यती (सन्यासी) बन सत्य की खोज में निकल पड़ा। 12 वर्षों तक वह ज्ञान की खोज में भटकता रहा। एक गाँव में एक दिन और एक शहर में पाँच दिन से अधिक वह नहीं टिकता था। बारह वर्षों के दौरान न तो उसने वस्त्र बदले और न ही प्रसाधन किया। 42 वर्ष की अवस्था में जब उन्हें ज्ञान अर्थात् कैवल्य की प्राप्ति हुई, तबतक वे निर्वस्त्र हो चुके थे। कैवल्य के द्वारा उन्होंने ज्ञान पर विजय पाने का वीरतापूर्ण कार्य किया, अतः वर्धमान का नाम अब महावीर और ज्ञान के विजेता होने के कारण 'जिन (विजेता)' कहलाए। अगले 30 वर्षों तक वे मगध, मिथिला, चम्पा आदि प्रदेशों में धर्म प्रचार का कार्य किया, जो जैन धर्म कहलाता था। बहत्तर वर्ष की उम्र में 468 ई० पू० महावीर का निर्वाण (मोक्ष, मुक्ति) राजगीर के निकट पावापुरी में हुआ।

जैन परम्परा के अनुसार महावीर इस धर्म के प्रथम तीर्थंकर अर्थात् आचार्य नहीं थे। जैनियों का विश्वास है कि जैन धर्म की स्थापना प्रायः 9वीं सदी ई० पू० में हुई और इसके प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे। ऋषभदेव के बाद और महावीर के मध्य 22 तीर्थंकर हुए। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे और 24वें अर्थात् अंतिम तीर्थंकर स्वयं महावीर थे। किन्तु महावीर से पूर्व जैन धर्म के अस्तित्व का कोई ऐतिहासिक अथवा पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिलता है।

महावीर ने जैन धर्म के सिद्धान्तों और नियमों का प्रणयन किया। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को पाँच व्रतों का पालन करना चाहिए, जिसे पंच-व्रत की संज्ञा दी गई। ये पाँच महाव्रत हैं — 1. अहिंसा, अर्थात् किसी प्रकार की हिंसा नहीं करना, 2. असूषा, अर्थात् झूठ न बोलना, 3. अचौर्य, अर्थात् चोरी न करना, 4. अपरिग्रह, अर्थात् सम्पत्ति अर्जित न करना और 5. ब्रह्मचर्य, अर्थात् इंद्रिय निग्रह करना। जैन धर्म के पाँच महाव्रतों में सर्वाधिक महत्व अहिंसा को दिया गया, जिसका तात्पर्य मनसा, वाचा, कर्मणा किसी भी प्राणी को क्षति न पहुँचाना है। अहिंसा दर्शन के तहत महावीर ने अपने अनुयायियों को निर्वस्त्र रहने का उपदेश दिया। आगे चलकर जैन धर्म में दो सम्प्रदाय हो गए — श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण करनेवाले) और दिगम्बर (नग्न रहनेवाले)।

महावीर के अनुसार जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है, जिसका अर्थ होता है, जीवन-मरण और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति। मोक्ष की प्राप्ति के लिए पाँच व्रतों का पालन करते हुए सम्यक ज्ञान, सम्यक ध्यान और सम्यक आचरण की इच्छा का अनुपालन [illegible] किया। इसे जैन धर्म में त्रिरत्न कहा जाता है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

जैन धर्म में देवताओं के अस्तित्व और वर्णाश्रम धर्म के चलन को स्वीकार किया गया। परन्तु देवताओं को 'जिन' के अधीन माना गया और मोक्ष का मार्ग सभी वर्णों के लिए खोल दिया गया। महावीर के अनुसार एक चांडाल भी जैन धर्म के पंचव्रतों के अनुपालन और त्रिरत्नों के मार्ग का अवलम्बन करते हुए मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जैन धर्म में अहिंसा पर अत्यधिक जोर देने कारण युद्ध और कृषि दोनों को निषेधित किया गया। परिणामतः सर्वाधिक संख्या में वैश्य ही इसके प्रति आकर्षित हुए।

महावीर ने अपने अनुयायियों का संघ बनाकर उसे जैन धर्म के प्रचार-प्रसार का जिम्मा सौंपा। जैन संघ में स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों को स्थान दिया गया। महावीर के जीवन काल में 14,000 लोगों ने जैन धर्म को स्वीकार किया था। जैन धर्म को उत्तर भारत में अधिक समर्थन नहीं मिला, किन्तु महावीर के निर्वाण के बाद कालक्रम में दक्षिण और पश्चिम भारत में जैन धर्म का यथेष्ट प्रसार हुआ। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने जीवन के अन्तिम चरण में जैन धर्म को अपनाकर राज्य त्याग दिया और जैन साधु के रूप में कर्नाटक में जैन धर्म का प्रचार प्रसार किया। महावीर के निर्वाण के दो सौ वर्षों के बाद मगध में पड़े बारह वर्षों के भीषण अकाल के दौरान पाटलिपुत्र से अनेक जैन मतावलम्बी दक्षिण भारत चले गए, जहाँ इन्होंने जैन धर्म का यथेष्ट प्रचार-प्रसार किया। 12 वर्षों के बाद जब अकाल समाप्त हो गया तो वे वापस लौटे, जिनके द्वारा जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों से समझौता करने का आरोप मगध में रह रहे जैनियों ने किया। दोनों पक्षों के विवादों को समाप्त करने के प्रयास निष्फल हो गए और जैन धर्म श्वेताम्बर तथा दिगम्बर नामक दो पंथों में विभाजित हो गया। उड़ीसा में कलिंग नरेश खारवेल ने जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया। ईसा पूर्व पहली और दूसरी शताब्दी में तमिलनाडु में जैन धर्म का यथेष्ट प्रसार हुआ। बाद में जैन धर्म को सर्वाधिक लोकप्रियता पश्चिम भारत के मालवा, गुजरात और राजस्थान में मिली, जहाँ आज भी जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या भारत के अन्य भागों से काफी अधिक है।

जैन धर्म ने ब्राह्मण धर्म को अन्दर से चुनौती देकर सुधारों की एक नयी धारा का सूत्रपात किया। धर्म प्रचार का माध्यम प्राकृत भाषा को बनाया गया, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृत का चरम विकास हुआ, जिसकी परिणति प्राकृत से उद्भूत अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के रूप में हुई। जैन धर्म ने परवर्ती काल में मूर्तिकला, स्थापत्य कला एवं तक्षण कला के विकास में योगदान दिया। सर्वोपरि जैन धर्म ने भारतीय संस्कृति में अहिंसा तथा लोक सत्ता के महत्व को जोड़कर, सांस्कृतिक विकास को नई गति प्रदान किया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA